# 7. अयोध्यां प्रत्यागमनम्

अस्मिन् पाठे रामः विमानेन पुनः रावणं हत्वा सुग्रीवादिभिः सह अयोध्यां प्रति आगच्छति, मार्गे च विविधाः नद्यः, आश्रमाः वनानि सीतां प्रति दर्शयति।

**ताभिः सह-अब्रवीत्** अत्र क्रियापदं किम्?-अब्रवीत् कः-राघवः, किं प्रेक्ष्य? ताभिः सह उत्थितं विमानं प्रेक्ष्य=उनके (वानरपत्नियों के) साथ उठते हुए विमान को देखकर, कस्य समीपे-ऋष्यमूकपर्वतस्य समीपे, काम् अब्रवीत्-किसको कहा? वैदेहीं–विदेहस्य जनकस्य पुत्रीं सीताम्।

**दृश्यते .... धातुभिर्वृतः** अत्र ऋष्यमूकपर्वतस्य वर्णनम्=कीदृशः गिरिवरः सविद्युदिव=बिजलीसहित तोयदः-बादल के समान, काञ्चनैः धातुभिः वृतः-सोने आदि धातुओं से ढका हुआ, दृश्यते-कर्मवाच्य-दिखाई दे रहा है।

**अत्राहं ..... मया** अत्र+अहं=अहम् (रामः वदति) सुग्रीवेण समागतः, सुग्रीव से मिला, सुग्रीव का विशेषण वानरेन्द्रः वानर सम्राट्, बालिनः–षष्ठी-बालि के वधार्थं-वध के लिए, समयः-समझौता-प्रणः।

**एषा सा... सुदुःखितः** एषा नलिनी चित्रकानना-कमलों और विचित्रवनों से युक्त, पम्पा झील, यत्र अहं, मैंने त्वया विहीनः = तुम्हारे बिना सुदुःखितः दुःखी, विललाप-विलाप किया।

**अस्यास्तीरे... मया,** मया शबरी दृष्टा- मैंने शबरी को देखा, कीदृशीं शबरीं-कैसी शबरी को-धर्मशालिनीं-धर्म का पालन करने वाली अत्र-यहां कबंधः नामकः राक्षसः मया निहतः-मारा गया, योजनबाहुः-कबन्ध का विशेषण-योजन तक फैली भुजाओं वाला।

**दृश्यते.... बली** सीते! जनस्थाने-इस जनस्थान पर श्रीमान् वनस्पतिः शोभायुक्त वृक्ष दिखाई दे रहा है, यहां विलासिनि! सम्बोधन, तव हेतोः–तेरे कारण पक्षिणां प्रवरः बली-पक्षियों में श्रेष्ठ, जटायुः रावणेन हतः-रावण के द्वारा मारा गया।

**एतद्- बलात्:** हे वरवर्णिनि, एतत् तद् अस्माकम् आश्रमपदम्–यह वह हमारा आश्रम है, वह विचित्र पर्णशाला-पत्तों की कुटिया भी दिखाई दे रही है जहां पर राक्षसेन्द्रेण रावणेन-राक्षस राज रावण के द्वारा तुम बलात्=बलपूर्वक हृता-हर ली गई थीं।

**एषा- कदलीवृक्षः** यह रम्या-सुन्दर, प्रसन्नसलिला-स्वच्छ जल वाली शुभा-पवित्र गोदावरी है और अगस्त्यस्य-अगस्त्य मुनि का कदलीवृक्षः-केले के पेड़ों से घिरा हुआ। आश्रमः दृश्यते-दिखाई दे रहा है।

**अतिः.... धर्मचारिणीः** जहां सूर्यवैश्वानरोपमः-सूर्य और अग्नि के समान, अत्रि कुलपति हैं। यहां त्वया-तुम्हारे द्वारा धर्मचारिणी-धर्म का आचरण करने वाली, पवित्र तापसी-तपस्विनी अनसूया दृष्टा-देखी गई थी।

**असौ ..... आगतः** असौ शैलेन्द्रः चित्रकूटः-वह पर्वतराज चित्रकूट विराजते-चमक रहा है। अत्र-यहां, माम्-मुझको प्रसादयितुं-प्रसन्न करने के लिए कैकेयीपुत्रः-भरतः समागतः-आया था।

**एषा सा..... मैथिलि!** मैथिलि-मिथिलावासिनी। एषा सा चित्रकानना यमुना-यह वो विचित्र वनों वाली यमुना दृश्यते-दिखाई दे रही है; और यहां श्रीमान्- शोभायुक्त भरद्वाज-आश्रमः भरद्वाज का आश्रम है।

**इयं च..... कानना** इयं गङ्गा दृश्यते- यह गंगा दिखाई दे रही है। कीदृशी गङ्गा-पूज्या, त्रिपथगा-जिसकी गति-देवलोक, भूलोक और पाताललोक में है, नानाद्विज-अनेक पक्षियों के समूहों से भरी हुई, सम्प्रपुष्पित-खिले हुए फूलों वाले वनों वाली, यह गंगा दिखाई दे रही है।

**शृंगवेरपुरं.... मालिनी** यह शृंगवेरपुर है जहां गुह मम सखा-मेरा मित्र है, यूपमालिनी–यूप-यज्ञस्तम्भ व उपयुक्त वृक्षों वाली सरयू दिखाई दे रही है।

**एषा ..... पुनरागता** यह वह अयोध्या है जो मम पितुः राजधानी–मेरे पिता की राजधानी है। दुबारा आई तुम इसको प्रणामं कुरु–प्रणाम करो।

अस्मिज् पाठे वर्णितानि <u>पर्वताः</u>, <u>नद्यः</u>, <u>आश्रमाः</u>, <u>सरः</u>, इत्यादीनि सन्ति

| | | | |
|---|---|---|---|
| ऋष्यमूकः | गोदावरी | अगस्त्याश्रमः | पम्पा |
| चित्रकूटः | यमुना | भरद्वाजाश्रमः | |
| | गंगा, | चित्रकूटे पर्णशाला | |
| | सरयू | | |

## प्रश्नाः

**I.** उपर्युक्त स्थानों के साथ एक-एक विशेषण पद जोड़िये यथा सविद्युद् तोयदः/काञ्चनैः धातुभिर्वृतः

**विशेषणपदम्**

| | |
|---|---|
| ..... | ऋष्यमूकः |
| ..... | गंगा |
| ..... | चित्रकूटः |
| ..... | अगस्त्याश्रमः |
| ..... | गोदावरी |
| ..... | भरद्वाजाश्रमः |
| ..... | यमुना |
| ..... | पम्पासरः |

**II. निम्नलिखितक्रियापदानि कर्तृवाच्ये परिवर्तयत–**

यथा (i) असौः गिरिवरः दृश्यते = अहम् अमुं गिरिवरं पश्यामि।, (ii) एषा सा दृश्यते पम्पा, (iii) मया धर्मशालिनी शबरी दृष्टा, (iv) महातेजः जटायुः रावणेन हतः, (v) त्वम् रावणेन बलात् हृता